लोककथा - Contd.

अन्य लोककथाएँ -

① बेताल पञ्चविंशति - बृहत्कथा के कश्मीरी संस्करणों से इस कथासंग्रह का उद्भव हुआ। इसमें विक्रम और बेताल से सम्बद्ध 25 शिक्षाप्रद एवं रोचक कहानियों का संग्रह है। इसकी मुख्य कथा विक्रमसेन की है जो एक तान्त्रिक की सिद्धि में सहायता के लिए एक वृक्ष पर लटकते हुए शव को मौन धारण किए ही अपने कंधे पर लादकर श्मशान में पहुँचा देने की बात स्वीकार करता है। शव में वेताल का निवास है। मार्ग में यह वेताल विक्रम को कोई कथा सुनाता है और अन्त में उससे सम्बद्ध जटिल प्रश्न पूछता है। उत्तर देने में विक्रम का मौन टूटता है और वेताल पुनः वृक्ष पर लटक जाता है। इस ग्रंथ की कथाओं का अनुवाद विश्व की विभिन्न भाषाओं में हुआ है, पञ्चतंत्र के समान यह भी विश्वसाहित्य बन गया है।

② सिंहासनद्वात्रिंशिका - इसकी कथा राजा भोज के सिंहासन से जुड़ी हुई है, जो विक्रमादित्य का था और उसमें बत्तीस पुतलियाँ लगी हुई थीं। भूमि में गड़े हुए इस सिंहासन को स्वच्छ करा जब भी भोज उसपर बैठने की चेष्टा करते, सिंहासन की एक पुतली निकलकर उन्हें रोकती और विक्रमादित्य के न्याय से सम्बद्ध एक कथा सुनाती। बत्तीस कथाएँ सुनाकर ये पुतलियाँ क्रमशः मुक्त हो गयीं, क्योंकि उनमें आत्माएँ थीं। इन कथाओं में विक्रमादित्य के सत्य, न्याय, पराक्रम और उदारता का वर्णन है। जो इन गुणों से युक्त होगा, वही सिंहासन

का अधिकारी होगा। इस प्रकार भोज उसपर नहीं बैठ पाते।

(3) शुकसप्तति – सत्तर कथाओं के इस रोचक संग्रह की प्रत्येक कथा स्वतंत्र होने पर भी एक शुक द्वारा अपनी स्वामिनी को सुनाए जाने के कारण परस्पर संबद्ध हैं। सुग्गा अपने स्वामी मदनसेन के परदेश चले जाने पर उसकी पत्नी की विरहजन्य पीड़ा को दूर करने के लिए एक-एक रात में एक-एक कथा सुनाता है। इस प्रकार मदनसेन की पत्नी अन्य पुरुषों के प्रति आकृष्ट नहीं हो पाती। मदनसेन लौट आता है। 'अलिफ लैला' की कथाओं के समान इन आख्यानों का उद्देश्य रोचकता के कारण श्रोताओं को अपने अनर्गल कार्यों से रोकना है।

अन्य कथाग्रंथ – शिवदास (1200 ई०) वेतालपंचविंशति के लेखक, ने 'कथार्णव' में मूर्खों तथा चोरों से सम्बद्ध 35 कथाएँ दी हैं।

प्रसिद्ध संस्कृत-मैथिली-कवि विद्यापति (14वीं शता० ई०) ने 'पुरुष परीक्षा' नामक ग्रंथ में 44 नैतिक और राजनीति विषयक कथाएँ लिखीं।

बल्लालसेन (16वीं शताब्दी ई०) ने 'भोजप्रबन्ध' नामक कथाग्रंथ लिखा, जो लेखक की कल्पना और प्रस्तुति से इतिहास-ग्रंथ का भ्रम उत्पन्न करता है। गद्य-पद्य से सम्मिश्र, इसकी भाषा न बहुत सरल है और न बहुत अलंकृत। इसके रसमय पद्य बहुत चमत्कारी हैं। इसका काव्यात्मक महत्त्व है।

Uma Pallav
Deptt. of Skt.
B.A. Ist yr + III yr.
02.07.20

Scanned with CamScanner